भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

तारीख़: 17 अक्टूबर, 2025.

गद्दार वेणुगोपाल उर्फ़ सोनू को मिट्टी में गाढ़ दो !!
सक्रीय वैचारिक संघर्ष को मज़बूत करते हुए लेनिनवादी पार्टी कार्यशैली और माओवादी नेतृत्वशैली में निपुण बनो !!

"आजादी के लिए पहली जनता की लड़ाई के बाद उदारवादियों और भयभीत बुद्धिजीवियों का मन हार गया, वे कायरों की भांति दोहरा रहे हैं: मत जाओ जहाँ पहले पिटाई हो चुकी है, जानलेवा रास्ते पर दुबारा मत चलो. सचेतनशील सर्वहारा उनको जवाब देगा: इतिहास में महान युद्द, महान क्रांतिकारी समस्याएँ केवल आगे बढ़े हुए वर्गों द्वारा बार-बार हमला करने के लिए लौटकर ही हल की जाती हैं; और वे हार से सबक सिखने के बाद जीत हासिल करते हैं. हारी हुई सेनाएँ अच्छा सीखती हैं. रूस के क्रांतिकारी वर्ग अपने पहले अभियान में पराजित हुए, पर क्रांतिकारी परिस्थिति अभी भी मौजूद है. कई दफा हमारी इच्छा से बहुत ज्यादा ही धीरे, अन्य रास्तों द्वारा और नए तरीकों से, एक और क्रांतिकारी संकट नजदीक आ रहा है, दुबारा पनम रहा है. हमें क्रांतिकारी संकट के लिए बहुल जनता को तैयार करने का दीर्घकालिक कार्यभार जारी रखने की जरूरत है; यह तैयारी अधिक ठोस और उच्चतम कार्यभारों को ध्यान में रखते हुए और ज्यादा गंभीर होनी चाहिए; और ज्यादा सफलतापूर्वक ढंग से इस कार्य को पूरा करना है, नए संघर्षों में हमारी जीत और ज्यादा पक्की होगी."

कामरेड लेनिन, प्रतिक्रिया के बरस

अमेरिकी साम्राज्यवादी ताकतें खुश हो रहीं हैं; इसके दो कारण हैं, एक है कि हमास ने अपने हथियारों को डाल दिया है और दूसरा है कि हमारी पार्टी के अंदर कामरेडों और लोगों के एक धड़े ने दुश्मन के सामने हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर दिया है. जनता का हत्यारा अमेरिकी साम्राज्यवादी ताकतें दुनियाभर में क्रांतिकारी युद्धों को खत्म करने के लिए मनोवैज्ञानिक युद्ध का इस्तेमाल कर रहा है. साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी के आर्थिक संकट के बढ़ने के साथ-साथ क्रांतिकारी आंदोलनों को खत्म करने की इसकी प्यास भी बढ़ रही है. इसके लिए वह मनोवैज्ञानिक हथियार के युद्ध को बढ़ा रहा है. यह विशेष तौर पर सच है क्योंकि हमारे समाज में एक विचारधारा के रूप में उत्तर आधुनिक विचारों के प्रभुत्व और नवउदारवादी उपभोक्तावादी संस्कृति का निरंतर बढ़ोतरी हो रही है. हाल ही में पूर्व पोलित ब्यूरो सदस्य सोनू द्वारा किया गया आत्मसमर्पण भी दुश्मन द्वारा चलाए गए मनोवैज्ञानिक युद्ध की कड़ी में ही देखना चाहिए.

15 अक्टूबर को मीडिया में एक तस्वीर आई. इसमें कामरेड मिलिंद समेत हजारों कामरेडों और बड़े पैमाने पर लोगों के हत्यारे फासीवादी बीजेपी-आरएसएस का प्रतिनिधित्वकारी महाराष्ट्र मुख्यमंत्री को अपनी AK-47 देकर आत्मसमर्पण करने वाले सोनू मुस्कुरा रहे हैं. यह तस्वीर बड़े पैमाने पर प्रचारित की गई है और शासक वर्ग अपनी नकली तस्वीर दिखाकर मार्क्सवाद लेनिनवाद माओवाद पर जीत का दावा पेश कर रहा है. मुस्कुराहट जो तस्वीर में दिख रही है, इससे बुनियादी रूप में देश और दुनिया में क्रांतिकारी कम्युनिस्ट खेमे और लोगों के बीच में गुस्सा पनम रहा है. यह तस्वीर कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में मजदूर वर्ग के मकशद से गद्दारी की तस्वीर के रूप में जानी जायेगी; जिसने पूरी जिंदगी लोगों को धोखा देने का प्रयास करते हुए दावा किया कि वह मौजूदा उत्पीड़ित और शोषित राज्य को उखाड़कर नए राज्य की स्थापना करने का प्रयास करेगा. पर धोखा देने का काम लंबे समय तक जारी नहीं रखा जा सका. जब इसकी पहली चिट्ठी 22 पेज के एक दस्तावेज के साथ मिडिया में आई जो कि कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में टॉयलेट पेपर (शहरों में शौच के बाद पिछवाड़ा साफ़ करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कागज) की हैसियत रखती है, से इस निम्न पूंजीवादी बुद्धीजीवी तत्व का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे के बीच भंडा फूट गया. ये दस्तावेज पार्टी में निम्न पूंजीपति वर्ग के सफर को व्यक्त करते हैं. इस निम्न पूंजीवादी के द्वारा सर्वहारा के साथ इतने लम्बे समय तक चलने के बावजूद इसकी निम्न पूंजीवादी पेटीनैस (छोटी सोच) बदली नहीं. क्रांति में निम्न पूंजीपति वर्ग के बारे में कामरेड लेनिन ने कहा है कि "बुर्जुआ जनवादी क्रांति में जल्दी जीत मिलने की आशा के साथ मजदूर आंदोलन में शामिल हुए और प्रतिक्रिया के दौर में टिक पाने में असक्षम थे. उसमें पार्टी के सिद्धांत ("क्रांतिकारी मार्क्सवाद से पिच्छे हट जाना": मौजूदा परिस्थिति पर प्रस्ताव) और कार्यनीति ("नारों को कम कर देना") तथा पार्टी की सांगठनिक निति में भी ढुलमुलपण प्रकट हुआ."

यह वेणुगोपाल/सोनू की पूरी तस्वीर पेश करती है, जो एक हीरो बना रहा जब तक कि पार्टी के पास समर्थकों का बड़ा आधार था, पर जब पार्टी के सामने मुश्किल समय आया तो उसने अपना आपा खो दिया. जो जरूरत में काम आता है, वहीँ असली दोस्त होता है. सोनू लोगों का दोस्त नहीं है. लंबे समय तक वह डीके के क्रांतिकारी जनता के पिच्छे छिपा रहा, जिन्होंने न केवल उसकी रक्षा की बल्कि उसकी हरेक जरूरत भी पूरी की, बरसों पार्टी और जनता ने इसका पालन-पोषण किया, वह इसीलिए नहीं मरा क्योंकि हमारे बहुत सारे बहादुर कामरेडों ने अपनी जान दांव पर लगाकर एक ऐसे आदमी की रक्षा की जो क्रांतिकारी के भेष में एक ढोंगी था. असली आत्मसमर्पण वाले दिन से कुछ समय पहले से ही सोनू राज्य के साथ था. इसके जरिए राज्य पूरी पार्टी से हथियारबंद संघर्ष छुड़वाने और तथाकथित मुख्यधारा (मुख्यधारा में शामिल होने का मतलब है पार्टी को ओपन और कानूनी रूप में तब्दील कर देना) में शामिल होने के लिए प्रयास कर रहा था. सोनू एक पोलित ब्यूरो सदस्य रहा है, इसीलिए, इससे यह उम्मीद की जा सकती है कि वह पार्टी को खुली और कानूनी रूप में तब्दील कर सकता है. पर हमारी पार्टी ने शासक वर्ग की योजना को चकनाचूर कर दिया. कामरेड राजू दा, कामरेड कोसा दा और अन्य कामरेडों ने न केवल उसकी राजनीतिक लाइन का भंडाफोड़ किया बल्कि उसपर सांगठनिक कार्यवाई भी की. जब यह शासक वर्ग का नुमाइंदा पार्टी को अंदर से ख़त्म कर देने के काम में फेल हो गया, तो जितना वह कर सकता था, उसने उतना अंजाम दिया. उसने आखिर में कुछ हताश कार्यकर्ताओं और हथियारों को साथ लेकर आत्मसमर्पण कर दिया.

आत्मसमर्पण के पिच्छे की कहानी शुरुआत होती है, जब सोनू ने अभय के नाम से एक ऑडियो फ़ाइल, क्रांतिकारी जनता के नाम अपील प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक और डिजिटल मिडिया में प्रचारित की. अपील में कहा गया

कि ‘बदली हुई अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति को देखते हुए और प्रधानमंत्री, ग्रहमंत्री और आला पुलिस अधिकारियों द्वारा हथियार डालने और आम जिंदगी में शामिल होने की अपील को देखते हुए, हमने हथियार डालने का फैसला लिया है.’ यह भी कहा गया कि हमारी पार्टी के शहीद कामरेड महासचिव अमरुदू उर्फ़ बस्वाराजू द्वारा शान्ति वार्ता के लिए किए गए प्रयासों का ही एक हिस्सा है. यह हमें एक महत्वपूर्ण बिंदु पर ला खड़ा करता है जहाँ पार्टी शान्ति वार्ता के लिए सक्रीय तौर पर बातचीत कर रही थी. कामरेड महासचिव द्वारा राज्य के साथ शांति वार्ता करना नवजनवादी क्रांति के कार्यभार को आगे बढ़ाने के लिए एक कार्यनीति के रूप में उल्लिखित किया और कामरेड चारु मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी द्वारा रखी गई हथियारबंद संघर्ष की लाइन से भटकाव करने और पार्टी के गैर कानूनी अस्तित्व को विघटित करने के लिए वर्गीय समझौता कभी भी नहीं होना चाहिए. पर सोनू के लिए शांति वार्ता करने का शासक वर्गीय परिप्रेक्ष्य ही उसका मकशद है. उनके लिए शांति वार्ता हथियार डालना है. शासक वर्ग और ब्राहमणवादी हिंदुत्व फासीवादी भारतीय सरकार ने सोनू जैसे विघटनवादियों को शांति वार्ता एक कवर उपलब्ध करवाया. शांति वार्ता के कवर के साथ विघटनकारियों के नेता सोनू ने सुनिश्चित किया कि बहुत सारे कामरेड अपने हथियारों को सौंप दें और शासक वर्ग की गोद में जाकर बैठ जाएँ. यह रिपोर्ट है कि 60 के आसपास कामरेडों ने गद्दार सोनू के नेतृत्व में 54 हथियारों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया है. यह हथियारों के साथ आत्मसमर्पण ऐसे समय पर आया है जब 20 सितंबर को दो केंद्रीय कमेटी सदस्य शहीद कामरेड राजू दा और शहीद कामरेड कोसा दा ने पोलित ब्यूरो, केन्द्रीय कमेटी और डीके स्पेशल जोनल कमेटी की तरफ से एक प्रेस स्टेटमेंट जारी कर जोर दिया कि “हथियारों को दुश्मन को सौंपकर और मुख्यधारा में शामिल होकर जनता के हितों के साथ गद्दारी करना हमारी नीति नहीं है. बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए वर्ग संघर्ष-जनयुद्ध जारी रखना हमारा फर्ज है.” इस दस्तावेज के जरिए पार्टी ने सोनू के खिलाफ कार्यवाई भी की और प्रवक्ता के पद से उनको हटा दिया. स्टेटमेंट में यह भी कहा था कि यदि सोनू आत्मसमर्पण करना चाहता है तो वह ऐसा करने के लिए आजाद है परंतु उनको हथियारों को साथ नहीं लेकर जाना चाहिए. पार्टी आदेश के बावजूद, उसने बड़ी तादाद में हथियारों को लिया और उनको दुश्मन बलों को सौंप दिया. जन मुक्ति छापामार सेना के कठिन परिश्रम और शहीदों के खून से इकट्ठा किए गए हथियार जनता के दुश्मन सोनू ने आत्मसमर्पण करके राज्य को सौंप दिए. किस मुँह से वह डीके की आदिवासी जनता का सामना करेगा? उन शहीदों के माँ-बाप को वह क्या जवाब देगा जिन्होंने उसके नेतृत्व में अपनी जान कुर्बान कर दी? इस बेशर्म हत्यारे शासक वर्ग के सूअर ने डीके में जन हथियारबंद आंदोलन को कुचलकर घुटने टेक दिए.

वह कमेटियों में टूट करवाने में व्यस्त रहा, जब उसके प्रयास केन्द्रीय कमेटी और पोलित ब्यूरो में फेल हो गए, तो वह SZC स्तर तक गया, वहाँ वह अवसरवादी रुपेश उर्फ़ सतीश को प्रभावित कर सका जिसने 20 कामरेडों को आत्मसमर्पण करवाने में नेतृत्व दिया. रुपेश ने ‘बस्तर टॉकिज’ को दिए साक्षात्कार में इसे आत्मसमर्पण कहने की बजाय कहा कि यह संघर्ष का एक तरीका है और अब से हम सोनू के नेतृत्व में खुले और कानूनी संघर्ष का नेतृत्व करेंगें. उसने खुद जोड़ा कि मुख्यधारा में शामिल होने का निर्णय किसी कमेटी द्वारा नहीं लिया गया है. यह विघटनवाद नहीं है तो और क्या है? वे बेशर्मी से इसे पार्टी को बचाना कहते हैं. कामरेड लेनिन ने कहा था कि पार्टी के गैरकानूनी स्वरूप जो कि भूमिगत स्वरूप है, पर हमला पार्टी पर एक हमला है. सोनू ने पार्टी को बचाने के नाम पर पार्टी को विखंडित किया है. यह घोर अवसरवाद है. इसका छोटा वर्जन हमने सुमित-साहिल के रूप में भी देखा, हमने देखा कि कैसे वो कामरेडों को भूमिगत जिंदगी को छोड़कर ओपन होने के लिए प्रोत्साहित करने का

प्रयास कर रहे थे. क्या सोनू इन जैसा नहीं है? सुमित-साहिल ने विघटनवाद क्यों किया? और सोनू क्यों कर रहा है? अपनी जिदंगी को बचाने के लिए, पैसा और बड़ा घर पाने के लिए जिसमें वह और पहले आत्मसमर्पण कर चुकी उसकी पत्नी एक 'खुशहाल जिदंगी' जी सकें. शासक वर्गीय जिंदगी जीने की चाहत विश्व सर्वहारा की उम्मीदों को कुचलने पर बनी है. इस प्रकार हरेक जो मुख्यधारा की जिंदगी जीना चाहता है, वह विघटनवादी बन जाता है.
यह दर्ज करना भी जरुरी है कि 15 अक्तूबर के इंडियन एक्सप्रेस में कहा गया है कि सरेंडर करवाने में अनिल ने अहम भूमिका निभाई है. अखबार की रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि अनिल ने गद्दार सोनू को गढ़चिरोली में जुड़ने के लिए चिट्ठी लिखी. अखबार में दिए गए चिठ्ठी के अंश में कहा गया है कि "हम एक सच्चे और सवेंदनशील बुद्धीजीवी को मरने नहीं देना चाहते." सोनू एक शासक वर्गीय बुद्धीजीवी है और शासक वर्ग की जरूरतों के प्रति सवेंदनशील है और उत्पीड़ित और शोषित जनता के लिए नहीं. सवाल है यह अनिल कौन है? 2024 में, अनिल उर्फ़ आसीन उर्फ़ नरेंद्र उर्फ़ गगनदीप में अराजकतावाद होने के कारण पार्टी की प्राथमिक सदस्यता रद्द कर दी गई थी. बाद में 20 अक्टूबर, 2024 को उसने अपनी पत्नी सोनिया उर्फ़ अंजू के साथ दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया. उत्तर के अंतर्गत एक जोनल कमेटी ने उस गद्दार के खिलाफ सर्कुलर जारी करके पार्टी सदस्यों के सामने भंडाफोड़ किया. एक मध्यम वर्ग के रूप में उभरने और अपनी चमड़ी को बचाने के लिए इन्होने पार्टी और जनता के साथ गद्दारी कर दी. पार्टी में अनिल सबसे सक्रीय वामपंथी लफ्फाज था. इसी प्रकार, भूमिगत लाइन का सबसे सक्रीय प्रचारक था जिसने उस समय के नेतृत्व की भी इस पर खुले और क्रूर ढंग से आलोचना की.

हम सबने देखा कि कैसे हमारे इलाके के शहीदों को याद करते हुए उसने रोना शुरू कर दिया था. वह रोना किसके लिए था? यह मुख्यत उसके अंदर मौजूद शासक वर्गीय विचारधारा के प्रभुत्व को छुपाने के लिए ही था. वह मुख्यत पार्टी से बाहर जाने और शासक वर्गीय खेमें में शामिल हो जाने वाले पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा था. वह पल तब आया जब पार्टी ने उसकी अराकतावादी गतिविधियों के लिए उसके खिलाफ कार्यवाई की. अब राज्य इसको विघटनकारियों की व्यापक एकता बनाने के लिए इस्तेमाल कर रहा है. कामरेड लेनिन ने हमें सावधान किया था कि अवसरवादी क्रांतिकारी आंदोलन में शासक वर्गीय तत्व होते हैं. यह हमारे समय में भी सच है. लाल नारों की आड़ में अनिल और सोनू जैसे शासक वर्गीय प्रतिनिधि छिपे हुए थे. राज्य इंटेलीजेंस ने इन विघटनकारियों को एकजुट करने के लिए काम किया. अनिल आत्मसमर्पण के बाद से गढ़चिरोली में ही है और राज्य ने सोनू को भी गढ़चिरोली में बुलाया है; यह पार्टी को नष्ट कर देने के लिए विघटनकारियों को एकजुट करने के प्रयास के अलावा कुछ भी नहीं है. आज शासक वर्ग और उसके प्रतिक्रियावादी राज्य को बचाने के मकशद से पार्टी, जनसेना और सयुंक्त मोर्चा पर किए जा रहे हमलों में सोनू-बलराज-अनिल-सुमित-साहिल एकजुट खड़े हैं.

सोनू पार्टी के अंदर और बाहर मौजूद अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों का वैचारिक और राजनीतिक नेता है. उसने 22 पन्नों के दस्तावेज, चिट्ठियों और प्रेस बयानों को जारी कर वैचारिक राजनीतिक दृष्टिकोण व्यक्त किया है. उसने कहा "अब कम से कम, बदलती हुई परिस्थितियों और समय के अनुसार रुसी और चीनी लाइन की कठमुल्लावादी पद्धति को छोड़ने का सिर्फ एक कार्य पार्टी के सामने बच गया है, भारत में क्रांति करने के लिए भारत के समय और स्थान के अनुरूप लाइन बनानी होगी." इस पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने यह कहते हुए जवाब दिया कि "वह हथियारबंद संघर्ष को नकारता है और वह संसदीय रास्ते पर चलना चाहता है. इसीलिए प्रचंड की तरह का नवसंशोधनवाद हो सकता है." इसका साफ़ तौर पर मतलब है कि पार्टी के अंदर अवसरवादियों

और विघटनवादियों के खिलाफ तीखा संघर्ष चल रहा है. हमारे क्षेत्र में भी, उत्तर के अंतर्गत आने वाली एक जोनल कमेटी के साथी भी पार्टी के अंदर और बाहर के अवसरवादियों-विघटनवादियों-संशोधनवादियों के खिलाफ संघर्ष कर रही है. हमारे मसौदा राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा में भी हमने वर्तमान दौर को विघटनवादियों के खिलाफ संघर्ष के रूप में चिन्हित किया है. इसी प्रकार, हमारी केन्द्रीय कमेटी सूरजकुंड योजना के खिलाफ संघर्ष के साथ-साथ अवसरवादियों और विघटनवादियों के खिलाफ भी एक गंभीर संघर्ष कर रही है. हमारी केन्द्रीय कमेटी द्वारा 20 सितंबर, 2025 को जारी प्रेस ब्यान एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, यह पार्टी निर्माण के लेनिनवादी रास्ते पर एकजुट रहने की पार्टी की प्रतिबद्धता को पुनर्स्थापित करता है. प्रेस ब्यान का तरीका पार्टी की 9वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस में निर्धारित की गई राजनीतिक लाइन के अनुसार तीखा और सीधा है. इसका सार कामरेड माओ के कथन के समान है "वह जो हजारों चीरे लगने के बावजूद मौत से ना डरे, राजा को घोड़े से उतारने का साहस कर सकता है, जब हम समाजवाद और साम्यवाद के लिए लड़ रहें हैं तो, हमें इसी प्रकार का बेबाक साहस दिखाना चाहिए." 20 सितंबर के प्रेस ब्यान में इसी प्रकार का साहस दिखाते हुए कहा कि "हथियार डालने का फैसला लेकर शांति वार्ता के लिए जाना मालेमा सिद्धांत और हमारी राजनीतिक-सैनिक लाइन के विपरीत है. हथियार डालने का मतलब उन्हें दुश्मन को सौंपकर आत्मसमर्पण करना है. अस्थाई संघर्ष विराम के नाम पर हथियारबंद संघर्ष को छोड़कर हथियारों को दुश्मन के सामने सौंप देने का मतलब एक क्रांतिकारी पार्टी को संशोधनवादी पार्टी बना देना है. दुश्मन को हथियार सौंप देने का मतलब हमारे शहीदों और देश की व्यापक जनता (उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित सामाजिक समूहों, उत्पीड़ित नस्लों) के साथ गद्दारी करना है. यह एक धोखा और घोर आधुनिक संशोधनवाद है. इसीलिए हम अपील करते हैं कि दुश्मन को हथियार सौंपकर आत्मसमर्पण करने वाले सोनू की इस गद्दारी की सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों, पार्टी सदस्यों, जेल में बंद हमारे साथियों, पार्टी नेता और क्रांतिकारी हमदर्दों द्वारा कड़ी निंदा की जानी चाहिए." हमारे आंदोलन के हमदर्द लोगों द्वारा हाल ही में की गई मीडिया रिपोर्टों पर यदि विश्वास किया जाए तो, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर बिना ढगमगाए चलते हुए कामरेड महासचिव बसवाराज, राजू दा, कोसा दा और कई अन्य कामरेडों की शहादत के पिच्छे सोनू को ही कारण बताया जा रहा है. राजू दा और कोसा दा ही थे जिन्होंने केंद्रीय कमेटी की तरफ से सोनू की निंदा करते हुए प्रेस ब्यान दिया. इसीलिए, यह आसार है कि सोनू ने उनको शहीद कराने के लिए व्यू रचा होगा.

कामरेडों, यह लाइन समझना भी जरुरी है जो गद्दार अपनी बेशर्मी और कायरता को छुपाने की कड़ी में ले रहे हैं. इन गद्दारों द्वारा उठाए बिन्दुओं को हम इस प्रकार व्याख्या कर सकते हैं:

1. देश की आर्थिक-राजनीतिक हालात बदल चुकी हैं.
2. भारत में चीनी या रुसी लाइन को लागू करना कठमुल्लावाद है.
3. हथियारबंद संघर्ष ही संघर्ष की एकमात्र तरीका अपनाने के कारण पार्टी वामपंथी भटकाव का शिकार हो गई है.
4. संसदीय भागीदारी क्रांतिकारी संघर्ष का हिस्सा होगी.

क्या ये सभी सवाल हमारी पार्टी में पहले से ही हल नहीं हो चुके हैं? क्या प्रचंड ने इन्हीं जैसे सवाल नहीं उठाए थे? पर हम इन सवालों को एक बार और देखेगें. हमारी पार्टी ने देश की आर्थिक और राजनीतिक हालातों में आए बदलावों के बारे में हाल में जारी दस्तावेज 'उत्पादन संबंधों में बदलाव-हमारा राजनीतिक कार्यक्रम' व्याख्या किया है. हमारी पार्टी ने न सिर्फ बदलावों का मूल्यांकन किया बल्कि 5 क्षेत्रों की सूची में दो और क्षेत्र जोड़े भी हैं:-

एक जहाँ व्यापक पैमाने पर बागवानी हो रही है और दूसरा, जहाँ पार्टी नेतृत्व में भीषण वर्ग संघर्ष और वैश्वीकरण के कारण अर्धसामंतवाद तुलनात्मक रूप से कमजोर हुआ है. इस दस्तावेज के साथ ही, पार्टी ने नवजनवादी क्रांति के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए कई विशिष्ट कार्यनीति भी विकसित की है.

पर बहस अभी भी जारी है क्योंकि जब पार्टी के अंदर निम्न पूंजीवादी तत्व की मौजूदगी होती है, जब सर्वहारा वर्ग निम्न पूंजीपति से ज्यादा कुर्बानी की मांग करता है, तो वह सर्वहारा की क्रांतिकारी प्रतिबद्धता के कारण घबराहट महसूस करता है, फिर ऐसे समय में, निम्न पूंजीपति कुछ सिद्धांत निकालता है. ऐतिहासिक रूप से, महान संशोधनवादी बर्नस्टीन जो कामरेड मार्क्स और फ्रेडरिक ऐंगेल्स के राजसत्ता को ख़त्म करने के क्रांतिकारी सिद्धांत में संशोधन करके वर्गीय समझौतावादी सुधारवादी सिद्धांत में तब्दील करना चाहता था. सोनू नए रूप और रंग में बर्नस्टीन का ही प्रतिनिधित्व करता है.

कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी के अमूल्य योगदान के कारण भारत का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन आधुनिक संशोधनवाद के कीचड़ से बाहर निकल पाया जो भारतीय रास्ते के नाम पर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और शांतिपूर्ण वर्ग संघर्ष की ख्रुश्चेव के संशोधनवादी विचारधारा को ही लेकर आगे बढ़ रहा था. कामरेड चारू मजुमदार और कन्हाई चटर्जी ने स्थापित किया कि भारतीय जनता की मुक्ति के लिए कामरेड माओ द्वारा निर्धारित रास्ता ही होगा, चूँकि चीन जैसे भारत भी अर्ध औपनिवेशिक-अर्ध सामंती ही है, भारतीय क्रांति का रास्ता चीनी रास्ता ही होगा, यह समझदारी एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका के औपनिवेशिक, अर्ध औपनिवेशिक-अर्ध सामंती देशों में क्रांतियों के इतिहास और क्रांतिकारी जनयुद्ध में चीन के अनुभवों के बारे में ठोस मूल्यांकन के आधार पर बनाई गई. इन सब देशों में संघर्ष का मुख्य रूप हथियारबंद संघर्ष और संगठन का मुख्य रूप सेना ही होगी, पर जन संघर्ष और जनसंगठन के दुसरे तरीके भी जरुरी होंगें. इन सब तथ्यों के मद्देनजर हमारी पार्टी की रणनीति-कार्यनीति में जिक्र है कि "युद्ध के शुरू होने से पहले सारे संगठन और संघर्ष युद्ध की तैयारी में रहेंगें और युद्ध छिड़ जाने के बाद प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध की सेवा में होंगें." रास्ते का सवाल केवल तब हो सकता है जब कोई देश कुछ व अन्य रूपों में सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करने का अनुभव हासिल करे. इसके आधार पर समान्यीकरण बन सकता है और एक आम नियम बन जाता है जिसे समान परिस्थितियों में हरेक जगह लागू किया जा सकता है. इसीलिए 'भारतीय रास्ते' की बातें करना बकवास है. यह क्रांतिपूर्व अर्ध औपनिवेशिक अर्ध सामंती चीन में लोगों द्वारा दी गई महान कुर्बानियों द्वारा स्थापित रास्ते को छोड़ने की एक दलील है. यह एक साम्राज्यवादी आकाओं की प्रशंसा गान में हथियारों को छोड़ देने की दलील है. यह दक्षिणपंथी अवसरवाद के अलावा और कुछ नहीं है. पार्टी के अंदर अवसरवादी और विघटनवादी हमेशा सही सर्वहारा लाइन को मिटटी में मिला देने के लिए एक तरीके के रूप में वामपंथी भटकाव के खिलाफ संघर्ष करने के नारे का इस्तेमाल करते हैं. यह याद रखना जरुरी है कि हमारी पोलित ब्यूरो द्वारा हमारे आंदोलन के पिच्छे हटने के कारणों का मूल्यांकन करते हुए जोनल कमेटी सदस्यों तक एक दस्तावेज जारी किया गया है. सार रूप में, दस्तावेज में पिच्छे हटने के निम्न कारण बताए गए हैं:-

1. दुश्मन द्वारा किए गए हमलों का सही तरीके से आकलन करने और नए तौर-तरीके विकसित करने में असक्षम होना.
2. मजदूरों और नए उभरे मध्यम वर्ग में पार्टी निर्माण नहीं कर पाए.

3. पार्टी और जनसेना में अर्थवाद, कानूनवाद और मनोगतवाद जैसे गैरसर्वहारा रुझानों की बड़े पैमाने पर मौजूदगी का होना; महिला-पुरुष संबंधों से जुड़े अनैतिक मामलों के होने के बारे में भी जिक्र किया गया है.
4. भूमिगत पार्टी निर्माण के सिद्धांत को व्यवहार में लागू नहीं कर पाना. हमने सिद्धांत में तो भूमिगत पार्टी निर्माण को अपनाया लेकिन हमारी कार्यपद्धति खुली या अर्ध खुली रही.
5. कुछ क्षेत्रों में हमारी पार्टी के अंदर दक्षिणपंथी भटकाव मौजूद है; जो भूमिगत पार्टी निर्माण की तरफ इसीलिए नहीं जाते क्योंकि वे सोचते हैं कि किसी के भूमिगत होने से जनांदोलन कमजोर हो जाते हैं.

इस दस्तावेज में कहीं भी वामपंथी भटकाव का जिक्र नहीं किया गया है. यदि 2019 में पार्टी द्वारा सुदृढ़ीकरण के आह्वान से लेकर अब तक के कालखंड को देखा जाए, जब पार्टी भीषण संकट का सामना कर रही है; हम पार्टी के रूप में भूमिगत पार्टी निर्माण नहीं करने और पार्टी को खुले और कानूनी कामकाज तक सिमित करने जैसे दक्षिणपंथी रुझानों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं. इस व्यवहार को तोड़ने के मकशद से पार्टी ने सुदृढ़ीकरण अभियान लिया और शहीद कामरेड महासचिव ने उत्तर भारत के कामरेडों के नाम एक चिट्ठी लिखी. यह नहीं है कि पार्टी ने खुले कानूनी जनांदोलन नहीं बनाए. दंडकारण्य इसका एक उदाहरण है. हमने सैन्य कैम्पों के खिलाफ बड़े बड़े जनांदोलनों का निर्माण किया है. इसी प्रकार हमारी पार्टी ने देश के अन्य भागों में भी कृषि कानूनों और CAA के खिलाफ खुले कानूनी संघर्षों का नेतृत्व किया. सोनू जो बात उठा रहा है, उसमें कोई भौतिक सच्चाई नहीं है. सोनू ने वामपंथी भटकाव की एक भी घटना को पेश नहीं किया है.

पार्टी ने नवजनवादी क्रांति के संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए खुले और कानूनी तरीकों का बखूबी इस्तेमाल किया है. परंतु ये अवसरवादी विघटनवादी और संशोधनवादी तत्व चाहते हैं कि पार्टी हथियारबंद संघर्ष और भूमिगत अस्तित्व को प्रमुखता देना बंद कर दे. यह दलील हथियारबंद संघर्ष से पूरी तरह भटककर और दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने की तरफ एक कदम है जैसे नक्सलबाड़ी लाइन के खुले गद्दार सत्यनारायण सिंह ने 1977 में किया था. इसी की तरह, सोनू भी इसी लाइन का एक अलग सदी का गद्दार है. इन सब हमलों के बावजूद हमारी पार्टी कामरेड माओ द्वारा स्थापित लाइन पर अडिग है कि *"युद्ध संघर्ष का मुख्य रूप और सेना संगठन का मुख्य रूप है. जनसंगठन और जनांदोलन जैसे अन्य तरीके भी बहुत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य हैं और उन्हें किसी भी परिस्थिति में नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए, पर उनका उद्देश्य युद्ध की सेवा करना है. युद्ध छिड़ने से पहले, सारे संगठन और संघर्ष युद्ध की तैयारी के लिए हैं...युद्ध छिड़ने के बाद, सभी संगठन और संघर्ष प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध की सेवा करने के लिए हैं."* इसीलिए एक कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के रूप में या तो आप युद्ध की तैयार में हैं या आप युद्ध में हैं. परंतु अनिल, बलराज, सोनू और अन्य आप या तो युद्ध की तैयारियों को नष्ट करने में या फिर क्रांतिकारियों को मरवाने में व्यस्त हैं. उनकी कहानी दीपक विश्वास जैसी ही है जिसने राज्य के साथ षड्यंत्र करके कामरेड चारु मजुमदार को पकड़वाकर उनकी हत्या करवा दी. कामरेड चारु मजुमदार की शहादत के दो तीन महीने के बाद एक पार्टी सदस्य द्वारा उसकी हत्या कर दी गई.

वे सब जो शासक वर्गीय जिदंगी जीने की चाहत रखते हैं, दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर रहे हैं और इसके लिए वह प्रचंड का सिद्धांत पेश कर रहे हैं, जिसे हमारी भूतपूर्व पार्टियों पीपल्स वार और माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र द्वारा नकार दी गई थी. नेपाल के युवाओं के मशहूर विद्रोह ने भी प्रचंड के रास्ते का साफ़ तौर पर भंडाफोड़ किया.

युवाओं के प्रदर्शनों में प्रचंड के रास्ते पर चलने वाले सामाजिक फासीवादी संशोधनवादी ताकतों के खिलाफ जनता का असली गुस्सा देखने को मिला. प्रचंड ने फ्यूज़न सिद्धांत गढ़ने के लिए नेपाल में उत्पादन संबंधों में आए मात्रात्मक बदलावों का इस्तेमाल किया; प्रचंड के इस सिद्धांत ने कहा कि हमें जड़ होकर चीनी और रुसी रास्ते पर नहीं चलना चाहिए. इसकी बजाय, हमें लोगों के आर्थिक और सामाजिक जीवन में आए बदलावों के अनुरूप हमें दोनों में से नेपाल को भाने (suit) वाला रास्ता चुनना चाहिए. यह सिद्धांत सलाह देता है कि तख्तापलट और दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को एक साथ मिला देने की आवश्यकता है. इसके तहत पूरे संघर्ष को दो अलग चरणों में चिन्हित करता है:- एक सामंतवाद विरोधी चरण और दुसरा साम्राज्यवाद विरोधी चरण. यह कहा गया था कि सामंतवाद विरोधी संघर्ष का चरण ख़त्म हो चूका है और अब साम्राज्यवाद विरोधी चरण है. इस प्रकार नए संघर्ष के नाम पर हथियारबंद संघर्ष और आधार क्षेत्र निर्माण की प्रक्रिया को छोड़ दिया. जो भी राजनीतिक अर्थशास्त्र जानता है, वह जानता है कि अर्ध औपनिवेशिक अर्ध सामंती देशों में साम्राज्यवाद अलग से संचालन नहीं करता है बल्कि यह सामंतवाद के साथ तालमेल बैठाकर काम करता है. इस प्रकार, साम्राज्यवाद से जोड़े बिना सामंतवाद पर कोई भी बातचीत करना अधूरापन है, इसी प्रकार कोई भी साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का निर्माण नहीं कर सकता, जब तक कि उसके साथ-साथ सामंतवाद विरोधी संघर्ष का निर्माण ना किया जाए. परंतु यह प्रचंड सिद्धांत शासक वर्ग द्वारा सराहा गया. प्रचंड सिद्धांत सार रूप में है क्या? यह विघटनवाद का एक रास्ता है. यह हथियारबंद संघर्ष के मैदान से भागकर शासक वर्ग की गोद में बैठ जाने की सैद्धांतिक और राजनीतिक दलील है. प्रचंड की तरह सोनू भी कह रहा है कि युद्ध के पुराने तरीके निरर्थक हैं और दीर्घकालीन लोकयुद्ध कोई विकल्प नहीं बचा है. प्रचंड ने जनसेना को प्रतिक्रियावादी राज्य की सेना के साथ मिला दिया था और इस प्रकार जनसंघर्ष छोड़ दिया था, वहीँ प्रचंड का भाई सोनू 60 कार्यकर्ताओं और 54 हथियारों के साथ राज्य से मिल गया है. हमें कामरेड आजाद के शब्दों को याद रखना चाहिए कि "कुलमिलाकर, देशभर में क्रांतिकारी जन सरकारों को भंग करने और PLA को प्रतिक्रियावादी सेना के साथ मिलाने का CPN (माओवादी) का फैसला अब तक हासिल की गई सारी क्रांतिकारी उपलब्धियों को खोकर एक उलटी प्रक्रिया शुरू कर देगा." सोनू हमारी पार्टी के साथ ऐसा ही करना चाहता है, परंतु पार्टी जिसके पास आजाद जैसे कामरेड हैं, पार्टी को शासक वर्गीय पुर्जों में से एक के रूप में तब्दील कर देने के उसके सपने अधूरे ही रहेंगें. सोनू ने भारत का संविधान पकड़ा हुआ है. यह बहुदलीय तथाकथित लोकतांत्रिक व्यवस्था में सामंती नेपाल के स्थान पर कानून का राज का पालन करने की प्रचंड द्वारा ली गई शपथ जैसा ही है.

प्रचंड द्वारा द हिन्दू में दिए साक्षात्कार में कहा गया था कि "यदि भारत में नक्सलाईट आंदोलन आपके लिए एक समस्या है, हम नेपाल में समस्याओं का नए तरीके से डील कर रहे हैं, इसीलिए यदि आप हमारे कामरेडों को रिहा कर देंगें तो हम नेपाल में बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम करने में कामयाब होंगें, यह भारत में नक्सलाईट आन्दोलन के लिए एक बहुत बड़ा संदेश हो पाएगा. दुसरे शब्दों में, उनके लिए नए राजनीतिक तरीके से सोचने के लिए जमीन तैयार हो पाएगी. शब्द काफी नहीं हैं; लोकतंत्र को स्थापित करने के बारे में हम जो कह रहे हैं, उसे सत्यापित करने की भी जरूरत है." तब से शासक वर्ग ने प्रचंड के इस ब्यान को हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन का खात्मा करने के लिए एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया है. क्रांतिकारी आंदोलन को छोड़कर शासक वर्ग के खेमे में जाने की इच्छा रखने वालों के लिए प्रचंड का सिद्धांत मदद के लिए आया है. यदि सोनू के विघटनवाद को देखें तो हम पाएंगें कि शुरूआती तौर पर वह कह रहा था कि पार्टी को अस्थाई तौर पर संघर्ष विराम कर देना चाहिए, कुछ अस्थाई समय के लिए पार्टी को हथियारबंद संघर्ष छोड़ने के साथ मुख्यधारा

में शामिल हो जाना चाहिए, इसे खुली और कानूनी बन जाना चाहिए. क्या यह प्रचंड के जैसा अवसरवादी तरीका नहीं है? प्रचंड शुरुआत में कह रहा था कि दीर्घकालीन लोकयुद्ध को तख्तापलट की लाइन से जोड़ देना चाहिए, पर आखिर में, वह शासक वर्ग के खेमें में उतर गया. अस्थाई संघर्ष विराम से लेकर सम्पूर्ण आत्मसमर्पण से सोनू का असली रंग उजागर हो गया और यह कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए एक सबक छोड़ गया है; वह है, अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ आखिर तक संघर्ष जारी रखने का सबक.

प्रचंड की नवसंशोधनवादी सिद्धांत की शुरुआत इस समझदारी के साथ होती है कि साम्राज्यवाद और सामंतवाद एक दुसरे से दूर-दूर हैं और एक दुसरे से जुड़े हुए नहीं हैं. यह समझदारी कि भारत में साम्राज्यवाद के दो पहिए हैं एक बड़ा जमींदार वर्ग और दूसरा बड़ा पूंजीपति वर्ग, राजनीतिक अर्थशास्त्र के इतिहास पर आधारित है, साम्राज्यवाद अपने आपको सामंतवाद के कारण ही बनाए रखे हुए है, इसी प्रकार आज सामंतवाद नए रूपों में साम्राज्यवाद के कारण ही बरकरार रखे हुए है. परंतु कुछ साथी गलत समझदारी रखते हैं कि साम्राज्यवाद नेतृत्व कर रहा है और वह ऐसे बिंदु पर पहुँच जाते हैं जहाँ उसके विकास के लिए सामंती जरूरत नहीं पड़ती. फिर कुछ साथी व्याख्या करने लग जाते हैं कि भारतीय समाज का प्रधान अन्तर्विरोध साम्राज्यवाद है और साम्राज्यवाद सामंतवाद से अलग है. यह समझदारी प्रचंड लाइन पर पहुँचने का शुरूआती बिंदु बन जाती है. एक और व्याख्या है कि जो साम्राज्यवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति के बीच अंतर करने का प्रयास करती है, वे कहते हैं कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग साम्राज्यवाद से अलग है, दलाल नौकरशाह पूंजीपति तेजी के साथ विकसित हो रहा है और भारतीय राज्य का नेतृत्व कर रहा है. वे कहते हैं कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग ज्यादा ताकतवर है और इसीलिए भारतीय समाज में प्रधान अन्तर्विरोध दलाल नौकरशाह पूंजीपति की होनी चाहिए.

भारतीय राज्य में सामंती वर्ग और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग की स्थिति के सवाल को लेकर यहाँ 1964 में हुई सीपीएम की सातवीं कांग्रेस में पारित स्टेटमेंट पर एक संक्षित नजर डालना प्रासंगिक हो सकता है: **“मौजूदा भारतीय राज्य जमींदारों और पूंजीपतियों का एक संगठन है जिसका नेतृत्व बड़ा पूंजीपति वर्ग कर रहा है.”** इस व्याख्या का आधार यह तर्क बना देता है कि साम्राज्यवाद का मुख्य पहिया भारतीय बड़ा पूंजीपति वर्ग है; साल 1947 में सत्ता में आने के बाद अपार धन और ताकत अर्जित कर एक प्रभावशाली वर्ग के रूप में उभरा. बड़ा दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के प्रधान अन्तर्विरोध होने के सवाल पर संशोधनवादी और नवसंशोधनवादी लाइन को हराने के बाद नक्सलबाड़ी विद्रोह हो सका, केवल तभी भारत के क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ सका और एक गुणात्मक छलांग लगी.

नक्सलबाड़ी के कारण स्पष्ट रूप से पता चला कि भारत का बड़ा पूंजीपति किसी भी ढंग से “भारतीय” नहीं है, और भारतीय राज्य में इसकी भूमिका और कुछ नहीं बल्कि यह साम्राज्यवाद का एक दौड़ता कुत्ता और सामंतवाद का एक दोस्त है. आधुनिक संशोधनवादी सीपीएम की व्याख्या में सामंतों और जमींदारों की भूमिका को नजरंदाज किया गया है. आधुनिक संशोधनवादी कहते हैं कि सामंतवाद केवल अवशेषों के रूप में ही मौजूद है. आज भी, भारतीय राज्य के वर्ग चरित्र का मूल्यांकन में यह रुझान कोई न कोई तरीके से पाया जा सकता है.

गुप्त काल में सामंतवाद के मजबूतीकरण से लेकर आज तक, हमारे देश का सामाजिक आधार सामंतवाद ही है और इसी आधार पर साम्राज्यवाद खड़ा है. कामरेड मार्क्स और माओ की भाषा में हम कह सकते हैं कि यहाँ

साम्राज्यवाद ने भी सामंतवाद को मुख्य सहारे के रूप बनाया हुआ है; साम्राज्यवाद सामंतवाद की रक्षा करता है और आखिर तक इसे बनाए रखने की कोशिश करता है. इस प्रकार भारतीय समाज एक अर्धऔपनिवेशिक अर्धसामंती समाज है. ऐसी परिस्थिति में, जब भारतीय समाज में साम्राज्यवाद सामंतवाद का मजबूत बोलबाला है और सामंतवाद इसके आधार के रूप में, मुख्य सहारे के रूप में काम करता है, तब यह कैसे संभव हो सकता है कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग नेतृत्वकारी हैसियत को बरकरार रखते हुए साम्राज्यवाद और सामंतवाद दोनों को पिच्छे छोड़ते हुए उनपर प्रभुत्व जमा रहा है. दूसरा, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों की तुलना में सामंती वर्गों की तादाद और प्रभाव को मद्देनजर रखना चाहिए, हम संसद, विधानसभाओं और नौकरशाही में सामंती जमींदार वर्ग के ज्यादा प्रतिनिधि देख सकते हैं. उनके चुनावों में, सामंतवाद प्रधान भूमिका निभाता है, यधपि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग रकम (धन) देकर भूमिका अदा करता है, मगर यहाँ भी साम्राज्यवाद ही है जो मुख्य भूमिका अदा करता है, हम सब जानते हैं कि चुनावों का खेल सरपंच-ठेकेदार-राजनेता के बीच का गठजोड़ और सामंती जाति व्यवस्था निर्धारित करता है. इस प्रकार, राज्य में सामंती और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग दोनों की सयुंक्त तानाशाही है और समाज में प्रधान अन्तर्विरोध सामंतवाद है.

जब यह कहा जाता है कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग राज्य को नेतृत्व दे रहा है तो इसका तात्पर्य है कि दलाल नौकरशाह पूंजी के कारण सामंतवाद कमजोर हो गया है. इसका मतलब है कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति जो कि साम्राज्यवाद है, प्रगतिशील है. इसका तात्पर्य है कि कामरेड लेनिन गलत कह रहे थे कि साम्राज्यवाद पूंजीवाद की मरणशील अवस्था है जो विकास में रुकावट है, राज्य में दलाल नौकरशाह पूंजीपति को नेतृत्वकारी पहलु बनाने वाली लाइन लेनिनवाद विरोधी है. फिर यह व्याख्या आ क्यों रही है? यह व्याख्या नव प्रचंड लाइन है जो अवसरवादियों के लिए पार्टी की सैन्य लाइन को विकृत करने के लिए रास्ता तैयार करती है. इस व्याख्या के अनुसार सामंतवाद कमजोर हो रहा है और दलाल नौकरशाह पूजीपति वर्ग नेतृत्व करता है. इसके अनुसार कम्युनिस्टों के लिए संघर्ष का मुख्य रूप चुनावों में भागीदारी करना और कानूनी दरिया में शामिल होकर पार्टी को खुली बनाना है. यह लेनिन के समय के विघटनवादियों जैसा ही है; महान विघटनवादी लारेन ने कहा कि रूस में अब सामंतवाद नहीं रहा और पूंजीवाद पैदा हो गया है, इसीलिए कम्युनिस्टों द्वारा किया जाने वाला हरेक काम खुला और कानूनी होना चाहिए. ये सुर गद्दार रुपेश और सोनू जैसे विघटनकारियों से बहुत मिलते हैं, वे भी यहीं कह रहे हैं कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग मजबूत हो गया है, इसीलिए हथियारों को डालकर कानूनी संघर्षों में हिस्सा लेना ही एकमात्र विकल्प रहता है. इसीलिए, जन मुक्ति की राह पर आगे बढ़ने के क्रम में और सर्वहारा क्रांति का झंडा ऊँचा उठाने के लिए कामरेड लेनिन जैसे दृढ होना और ज्यादा जरुरी है. हमें मौजूदा भारतीय समाज के पार्टी द्वारा किए गए मूल्यांकन पर अटल होना जरूरी है. राजनीतिक सैन्य लाइन में किसी भी प्रकार का भटकाव की शुरुआत और आधार राजनीतिक अर्थशास्त्र में ही होता है. यह कह सकते हैं कि संशोधनवादी सबसे पहले समाज में उत्पादन संबंधों के बारे में समझदारी में संशोधन को प्रस्तुत करने से शुरुआत करते हैं ताकि इसे राजनीति और सैन्य मामलों तक विस्तृत किया जा सके. इसीलिए हमें राजनीतिक अर्थशास्त्र में कोई भी बदलावों के प्रस्तावों पर सावधान रहना चाहिए, हमें क्रांतिकारी आंदोलन में और उसके इर्द-गिर्द सभी रंग-रूपों वाले अवसरवादियों-विघटनवादियों-संशोधनवादियों के खिलाफ एकजुट रहना चाहिए. मौजूदा समय में यह समझना मुनासिब है कि क्रांतिकारियों के सामने एक बड़ी परीक्षा है कि वे सोनू जैसे और अन्य गद्दार नवसंशोधनवादियों का भंडाफोड़ करने के लिए तैयार है या नहीं.

अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष जिंदाबाद !!

गद्दार सोनू को मिट्टी में गाढ़ दो !!

सक्रीय वैचारिक संघर्ष के लिए अटल रहो !!

9वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस द्वारा निर्धारित पार्टी लाइन पर मजबूती के साथ खड़े रहो !!

मालेमा का झंडा बुलंद रखो !!

पार्टी के केन्द्रीय कार्यभार पार्टी, जनसेना और सयुंक्त मोर्चा को बचाने, गुरिल्ला क्षेत्र और गुरिल्ला आधार क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिए प्रयास करते हुए, स्वतस्फूर्त आंदोलनों में हिस्सा लेते हुए पार्टी, जनसेना और सयुंक्त मोर्चा का निर्माण करने के लिए मजबूती के साथ आगे बढ़ो !!

दीर्घकालीन लोकयुद्ध जिंदाबाद !!

जारीकर्ता:

भाकपा (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC